पतंजलि विश्वविद्यालय

Skill Enhancement Course

!! सस्वर वेदपाठ!!

क्रेडिट-03 45 घण्टे

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

ईकाई-१

i. वैदिक वाङ्मय परिचय

ii. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।

v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-३

i. पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-४

i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

iii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

iv. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

v. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

पतंजलि विश्वविद्यालय

Skill Enhancement Course

!! पौराहित्य कोर्स !!

क्रेडिट–04 60–घण्टे

उद्देश्य–

- वैदिक पुरोहित परम्परा का ज्ञान कराना।
- सोलह संस्कारों का प्रबोध व प्रशिक्षण कराना।
- जन्मदिन, वर्षगाँठ, गृहप्रवेश आदि व होली, दिवाली आदि पर्वों में यज्ञ कराना तथा नैत्यिक यज्ञ कराना।
- पुरोहित बन स्वयं समृद्ध बनना व परिवार–समाज को संस्कारवान तथा उन्नत बनाना।

इकाई–१

i. यज्ञ की परिभाषा व प्रकार श्रौत व स्मार्तग्रथों में।

ii. गौतम धर्मसूत्र में यज्ञ के 21 भेद।

iii. गीता में 3 भेद।

iv. स्वामी दयानंद के अनुसार 3 भेद।

इकाई–२

i. 8 संस्कारों का प्रशिक्षण (गर्भाधान संस्कार से चूडाकर्म संस्कार)

इकाई–३

i. पुनः 8 संस्कारों का प्रशिक्षण (कर्णवेध संस्कार से अन्त्येष्टि संस्कार)।

इकाई–४

i. विशेष उपलक्षों में किये जाने वाले यज्ञपूजा पद्धति का प्रशिक्षण।

ii. जन्म दिवस, गृहप्रवेश, शिलान्यास, वर्षगांठ, पुण्यतिथि, पूर्णिमा, अमावस्या आदि।

iii. मकरसक्रांति, वासन्ती नवसस्येष्टि (होली), रामनवमी, श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन), कृष्ण जन्माष्टमी, विजयदशमी (दशहरा), शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)-स्वामी दयानंद निर्वाण दिवस, वसन्त पंचमी आदि।

इकाई-५

i. पुरोहित (याक्षिक) के आहार, विहार, विचार, व्यवहार, वाणी स्वभाव में सात्विकता व यज्ञ के भौतिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक पक्ष में महत्वता पर ज्ञान।

प्राप्ति ग्रंथ- संस्कारविधि, संस्कार चन्द्रोदय, आर्य पर्व-पद्धति, वैदिक नित्यकर्म विधि, यज्ञ-योग-आयुर्वेद चिकित्सा।

परिणाम-

- पौरोहित्य कार्य में विशेष दक्षता हासिल करना।
- पौरोहित्य कार्य में प्रवीणता प्राप्त कर समाज का मार्गदर्शन कर आगे ले जाना।
- इस परम्परा में आई विकृतियों को दूर कर विशुद्ध पौरोहित्य परम्परा का स्थापन करना।

पतंजलि विश्वविद्यालय

Skill Enhancement Course

!! यज्ञ चिकित्सा कोर्स !!

क्रेडिट–02 30–घण्टे

उद्देश्य–

- यज्ञ चिकित्सा का ज्ञान कराना।
- साध्य–असाध्य रोगों का यज्ञ चिकित्सा से उपचार करना।
- यज्ञ चिकित्सक को आर्थिक लाभ व स्वास्थ्य साधक को आरोग्य लाभ देना।

इकाई–१

i. चतुर्वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में वर्णित यज्ञ महिमा

इकाई–२

i. आयुर्वेद ग्रथों में वर्णित यज्ञ चिकित्सा।

ii. देवव्यपाश्रय चिकित्सा

iii. भूत विद्या

iv. धूम चिकित्सा

v. पंचप्राण पोषण

vi. पंच महाभूत पोषण

इकाई–३ अन्य संस्कृत ग्रंथों में यज्ञ/हवन का वर्णन।

i. यज्ञ की परिभाषा, प्रकार

ii. रामायण, उपनिषद् व नीति शास्त्र में यज्ञ का वर्णन।

iii. स्मृतिग्रंथ–गीता। मनुस्मृति आदि में यज्ञ की महिमा।

इकाई-४ यज्ञथैरेपी की प्रक्रिया विधि।

i. यज्ञ संबधित रोगानुसार सूक्त परिचय (मेधासूक्त, प्राणसूक्त, दीर्घापुष्यसूक्त, श्री सूक्त आदि)

ii. रोगानुसार हवन सामग्री व समिधा परिचय।

iii. यज्ञ भस्म/ash की उपयोगिता व प्रयोग।

इकाई-५ यज्ञ के वैज्ञानिक शोध।

i. हवन सामग्रियों पर शोध।

ii. यज्ञ भस्म पर हुए अनुसंधान।

iii. रोगों के ऊपर किये गये शोध।

iv. वायु पर किये गये शोध।

v. कृषि पर किए गए शोध।

vi. यज्ञ चिकित्सा कैसे काम करती है?

(**प्राप्ति ग्रंथ**- यज्ञ-योग-आयुर्वेद चिकित्सा, अग्निहोत्र एक अध्ययन, वैदिक नित्य कर्म विधि, यज्ञथेरेपी, यज्ञोपैथी)।

परिणाम-

- यज्ञ चिकित्सक रोगोपचार में विशेष रूप से प्रवीण होता है।
- यज्ञ चिकित्सा के बोध से संक्रामक-असंक्रामक रोगों से बचा कर स्वस्थ समाज का निर्माण होना।
- प्रारब्ध जनित रोग व अदृष्ट रोग का निवारण कर समाज को भयमुक्त करना।